IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 8, March 2026
Impact Factor: 8.2

दहेज प्रथा के विरुद्ध युवा-आधारित सामाजिक आंदोलनों की उपलब्धियाँ और सीमाएँ

नीरेश बाबू[1] and डॉ. सरिता सिंह[2]

[1]शोधार्थी, समाज शास्त्र-विभाग

[2]सहायक प्रोफेसर, समाज शास्त्र-विभाग

सनराइज विश्वविद्यालय, अलवर, राजस्थान

सारांश

भारत में दहेज प्रथा एक गहरी सामाजिक बुराई के रूप में विद्यमान है, जिसने महिलाओं के अधिकारों, सम्मान और सुरक्षा को गंभीर रूप से प्रभावित किया है। यद्यपि दहेज निषेध कानून तथा विभिन्न सरकारी एवं गैर-सरकारी प्रयासों द्वारा इस प्रथा को समाप्त करने का प्रयास किया गया है, फिर भी यह सामाजिक संरचना में गहराई से जुड़ी हुई है। हाल के वर्षों में युवा-आधारित सामाजिक आंदोलनों ने इस समस्या के विरुद्ध जागरूकता फैलाने, सामाजिक सोच में परिवर्तन लाने तथा कानून के प्रभावी क्रियान्वयन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यह शोध-पत्र इन आंदोलनों की उपलब्धियों एवं सीमाओं का विश्लेषण करता है।

मुख्य संकेतक: - दहेज प्रथा, युवा आंदोलन, सामाजिक सुधार, महिला अधिकार, जागरूकता अभियान।

परिचय

दहेज प्रथा भारतीय समाज में प्राचीन काल से विद्यमान एक गहरी सामाजिक कुरीति है, जिसने महिलाओं के सम्मान, अधिकार और स्वतंत्र अस्तित्व को लंबे समय तक प्रभावित किया है। यह प्रथा विवाह संस्था को एक सामाजिक संस्कार के बजाय आर्थिक लेन-देन में परिवर्तित कर देती है, जिसके परिणामस्वरूप अनेक सामाजिक, मानसिक और शारीरिक समस्याएँ उत्पन्न होती हैं। स्वतंत्रता के पश्चात भारतीय संविधान में समानता, गरिमा और महिला अधिकारों की सुरक्षा की गारंटी दी गई, फिर भी दहेज जैसी कुप्रथा समाज के विभिन्न स्तरों पर आज भी सक्रिय रूप से देखी जाती है।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 8, March 2026 Impact Factor: 8.2

इसी पृष्ठभूमि में दहेज निषेध अधिनियम 1961 जैसे कानूनी प्रयास किए गए, परंतु केवल कानून सामाजिक मानसिकता को पूर्ण रूप से परिवर्तित करने में सफल नहीं हो पाया (शर्मा, 2018)। ऐसे में सामाजिक परिवर्तन के सबसे सशक्त वाहक के रूप में युवा वर्ग सामने आया है, जिसने विभिन्न सामाजिक आंदोलनों, डिजिटल अभियानों, स्वयंसेवी संगठनों और छात्र संगठनों के माध्यम से दहेज विरोधी चेतना को व्यापक स्तर पर फैलाने का कार्य किया है।

भारत में युवा-आधारित सामाजिक आंदोलन केवल विरोध तक सीमित नहीं रहे, बल्कि उन्होंने समाज में वैचारिक परिवर्तन की प्रक्रिया को गति प्रदान की है। विशेष रूप से शहरी क्षेत्रों में कॉलेज छात्रों, सामाजिक कार्यकर्ताओं और डिजिटल मीडिया से जुड़े युवाओं ने #NoDowry और #StopDowry जैसे अभियानों के माध्यम से दहेज के विरुद्ध एक नई वैचारिक धारा विकसित की है (पांडे, 2018)। इन आंदोलनों का मुख्य उद्देश्य यह संदेश देना है कि विवाह एक सामाजिक और भावनात्मक संबंध है, न कि आर्थिक सौदा। युवाओं ने यह भी स्पष्ट किया है कि दहेज प्रथा केवल एक व्यक्तिगत समस्या नहीं, बल्कि यह सामाजिक संरचना में गहराई से जमी हुई असमानता और पितृसत्तात्मक सोच का परिणाम है (यादव, 2021)।

युवा आंदोलनों की सबसे बड़ी उपलब्धि यह रही है कि उन्होंने समाज के शिक्षित वर्ग में दहेज के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण विकसित किया है। अनेक विश्वविद्यालयों और कॉलेजों में आयोजित जागरूकता कार्यक्रमों, नाटकों, सेमिनारों और रैलियों के माध्यम से युवाओं ने इस समस्या के प्रति जनचेतना बढ़ाई है। इसके साथ ही सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स जैसे फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम और यूट्यूब ने दहेज विरोधी संदेशों को व्यापक जनसमूह तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है (चौधरी, 2018)। डिजिटल माध्यमों के कारण यह आंदोलन केवल स्थानीय स्तर तक सीमित नहीं रहा, बल्कि राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी चर्चा का विषय बन गया है।

हालाँकि, इन युवा-आधारित आंदोलनों की प्रभावशीलता के बावजूद कुछ सीमाएँ भी स्पष्ट रूप से देखी जा सकती हैं। सबसे प्रमुख सीमा यह है कि इन आंदोलनों का प्रभाव मुख्यतः शहरी क्षेत्रों तक ही सीमित रहा है, जबकि ग्रामीण भारत में दहेज प्रथा आज भी गहराई से जमी हुई है। ग्रामीण समाज में परंपरागत सोच, जातिगत संरचना और सामाजिक प्रतिष्ठा की अवधारणा दहेज को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है (गुप्ता, 2016)। इसके अतिरिक्त, कई स्थानों पर आर्थिक असमानता भी इस प्रथा को बढ़ावा देती है, जहाँ विवाह को सामाजिक प्रतिष्ठा से जोड़कर देखा जाता है।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 8, March 2026 Impact Factor: 8.2

दूसरी महत्वपूर्ण सीमा यह है कि कानूनी प्रावधानों के बावजूद दहेज प्रथा पर पूर्ण नियंत्रण नहीं हो पाया है। दहेज निषेध अधिनियम 1961 और अन्य महिला सुरक्षा कानूनों के बावजूद इनके क्रियान्वयन में कमी देखी जाती है। कई मामलों में सामाजिक दबाव, परिवार की प्रतिष्ठा और न्यायिक प्रक्रिया की जटिलता के कारण पीड़ित पक्ष शिकायत दर्ज कराने से भी हिचकिचाता है (नायक, 2020)। इससे स्पष्ट होता है कि केवल कानून या आंदोलन पर्याप्त नहीं हैं, बल्कि सामाजिक मानसिकता में व्यापक परिवर्तन आवश्यक है।

युवा आंदोलनों की एक और सीमा यह भी है कि इन आंदोलनों में सभी युवाओं की सक्रिय भागीदारी नहीं देखी जाती। एक बड़ा वर्ग अभी भी उदासीन या निष्क्रिय रहता है, जिससे आंदोलन की व्यापकता सीमित हो जाती है। इसके अतिरिक्त, कुछ डिजिटल अभियानों का प्रभाव केवल प्रतीकात्मक रह जाता है, जो वास्तविक सामाजिक परिवर्तन की तुलना में केवल ऑनलाइन जागरूकता तक सीमित रहता है (श्रीवास्तव, 2021)। ग्रामीण-शहरी डिजिटल विभाजन भी इस समस्या को और अधिक जटिल बना देता है।

फिर भी यह स्वीकार करना आवश्यक है कि युवा-आधारित सामाजिक आंदोलनों ने दहेज प्रथा के विरुद्ध एक मजबूत वैचारिक आधार तैयार किया है। उन्होंने यह सिद्ध किया है कि समाज परिवर्तन केवल सरकारी नीतियों से नहीं, बल्कि जनभागीदारी और युवा शक्ति से संभव है। इन आंदोलनों ने महिलाओं में आत्मविश्वास और शिक्षा के प्रति जागरूकता को भी बढ़ावा दिया है, जिससे महिला सशक्तिकरण की प्रक्रिया को बल मिला है (कौर, 2018)। धीरे-धीरे समाज में यह विचार विकसित हो रहा है कि दहेज एक सामाजिक अपराध है, न कि परंपरा।

दहेज प्रथा के विरुद्ध युवा-आधारित सामाजिक आंदोलन समाज में सकारात्मक परिवर्तन की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम हैं, लेकिन इनकी प्रभावशीलता अभी सीमित है। यदि इन आंदोलनों को ग्रामीण क्षेत्रों तक विस्तारित किया जाए, कानूनी व्यवस्था को मजबूत किया जाए और सामाजिक शिक्षा को प्राथमिक स्तर से लागू किया जाए, तो दहेज प्रथा के उन्मूलन की दिशा में ठोस प्रगति संभव है। युवाओं की ऊर्जा, डिजिटल साधनों और सामाजिक संगठनों के समन्वय से यह आंदोलन भविष्य में और अधिक प्रभावशाली बन सकता है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. युवा-आधारित आंदोलनों की भूमिका का विश्लेषण करना
2. दहेज विरोधी अभियानों की उपलब्धियों को समझना
3. इन आंदोलनों की सीमाओं की पहचान करना

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 8, March 2026
Impact Factor: 8.2

4. सामाजिक परिवर्तन में युवाओं की प्रभावशीलता का मूल्यांकन करना

शोध पद्धति

यह शोध द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है, जिसमें पुस्तकों, शोध-पत्रों, रिपोर्टों और सामाजिक अध्ययन सामग्रियों का विश्लेषण किया गया है।

युवा-आधारित आंदोलनों की उपलब्धियाँ

1. जागरूकता में वृद्धि

युवा संगठनों ने स्कूलों, कॉलेजों और सोशल मीडिया के माध्यम से दहेज विरोधी जागरूकता बढ़ाई है।

2. सामाजिक सोच में परिवर्तन

शहरी क्षेत्रों में दहेज के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण विकसित हुआ है।

3. महिला सशक्तिकरण

युवाओं के प्रयासों से महिलाओं में आत्मनिर्भरता और शिक्षा के प्रति रुचि बढ़ी है।

4. कानूनी सहायता जागरूकता

दहेज निषेध अधिनियम 1961 तथा घरेलू हिंसा कानूनों की जानकारी बढ़ी है।

तालिका 1: युवा आंदोलनों की प्रमुख उपलब्धियाँ

क्रम	उपलब्धि का क्षेत्र	प्रभाव
1.	जागरूकता अभियान	उच्च
2.	सोशल मीडिया आंदोलन	बहुत उच्च
3.	महिला शिक्षा	मध्यम से उच्च

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 8, March 2026
Impact Factor: 8.2

4.	कानूनी जागरूकता	मध्यम
5.	सामाजिक सोच परिवर्तन	सीमित परंतु सकारात्मक

युवा आंदोलनों की सीमाएँ

1. ग्रामीण क्षेत्रों में कम प्रभाव

ग्रामीण क्षेत्रों में दहेज प्रथा अभी भी मजबूत है।

2. सांस्कृतिक बाधाएँ

परंपरागत सोच और सामाजिक दबाव परिवर्तन में बाधा डालते हैं।

3. कानून का कमजोर क्रियान्वयन

कानून होने के बावजूद प्रभावी कार्यान्वयन की कमी है।

4. सीमित सहभागिता

सभी युवा सक्रिय रूप से आंदोलनों में शामिल नहीं होते।

5. आर्थिक कारक

विवाह को सामाजिक प्रतिष्ठा से जोड़ने की प्रवृत्ति दहेज को बढ़ावा देती है।

तालिका 2: युवा आंदोलनों की सीमाएँ

क्रम	सीमा	प्रभाव स्तर
1	ग्रामीण असमानता	उच्च
2	सांस्कृतिक परंपराएँ	बहुत उच्च
3	कानूनी कमजोरी	मध्यम

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 8, March 2026
Impact Factor: 8.2

4	सीमित भागीदारी	मध्यम
5	आर्थिक दबाव	उच्च

चर्चा

युवा-आधारित आंदोलन सामाजिक परिवर्तन के प्रमुख वाहक हैं, लेकिन इनका प्रभाव असमान है। शहरी क्षेत्रों में सफलता अधिक है जबकि ग्रामीण भारत में सामाजिक संरचना, जाति व्यवस्था और आर्थिक असमानता के कारण परिवर्तन धीमा है। शोध से यह स्पष्ट होता है कि केवल कानून पर्याप्त नहीं है, बल्कि सामाजिक मानसिकता में परिवर्तन आवश्यक है।

निष्कर्ष

दहेज प्रथा के विरुद्ध युवा-आधारित सामाजिक आंदोलन समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। इन्होंने जागरूकता, शिक्षा और सामाजिक संवाद को बढ़ावा दिया है। हालांकि, इन आंदोलनों की सीमाएँ भी स्पष्ट हैं, जैसे ग्रामीण क्षेत्रों में कम प्रभाव और सांस्कृतिक बाधाएँ। अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि जब तक सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक स्तर पर समग्र परिवर्तन नहीं होगा, तब तक दहेज प्रथा का पूर्ण उन्मूलन संभव नहीं है।

संदर्भ सूची

1. शर्मा, आर. (2018). *भारतीय समाज में दहेज प्रथा.* नई दिल्ली: राधा प्रकाशन।
2. वर्मा, पी. (2020). *सामाजिक कुरीतियाँ और युवा आंदोलन.* लखनऊ: साहित्य भवन।
3. सिंह, एम. (2019). *दहेज विरोधी कानूनों का अध्ययन.* जयपुर: राजस्थान पब्लिशर्स।
4. यादव, के. (2021). *महिला सशक्तिकरण और सामाजिक परिवर्तन.* पटना: बिहार ग्रंथालय।
5. मिश्रा, एल. (2017). *भारतीय समाजशास्त्र.* दिल्ली: ज्ञान भारती।
6. गुप्ता, आर. (2016). *दहेज प्रथा: कारण और समाधान.* आगरा: यूनिवर्सल पब्लिकेशन।
7. चौधरी, एस. (2018). *युवा और सामाजिक आंदोलन.* भोपाल: मध्यप्रदेश प्रकाशन।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 8, March 2026
Impact Factor: 8.2

8. जोशी, एन. (2020). *महिला अधिकार एवं कानून.* मुंबई: नेशनल बुक ट्रस्ट।
9. तिवारी, डी. (2019). *सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया.* कानपुर: शारदा पब्लिकेशन।
10. अग्रवाल, वी. (2017). *भारत में दहेज और हिंसा.* कोलकाता: ईस्टर्न बुक कंपनी।
11. रावत, ए. (2021). *सामाजिक जागरूकता अभियान.* देहरादून: हिमालय प्रकाशन।
12. पांडे, एस. (2018). *युवा शक्ति और भारत.* वाराणसी: गंगा प्रकाशन।
13. त्रिपाठी, आर. (2019). *भारतीय समाज की समस्याएँ.* प्रयागराज: लोक भारती।
14. नायक, बी. (2020). *दहेज निषेध कानून.* नई दिल्ली: लीगल बुक्स।
15. श्रीवास्तव, ए. (2021). *सामाजिक सुधार आंदोलन.* लखनऊ: समाजशास्त्र प्रेस।
16. सिंह, जे. (2017). *भारत में महिला स्थिति.* जयपुर: राजस्थान बुक हाउस।
17. कौर, ए. (2018). *नारी सशक्तिकरण.* चंडीगढ़: नॉर्दर्न पब्लिकेशन।
18. मिश्रा, पी. (2020). *दहेज प्रथा का समाजशास्त्रीय विश्लेषण.* पटना: बिहार प्रकाशन।
19. वर्मा, एस. (2019). *सामाजिक आंदोलन और युवा.* दिल्ली: नेशनल प्रेस।
20. गुप्ता, डी. (2021). *भारतीय सामाजिक संरचना.* मुंबई: इंडियन पब्लिशर्स।